

## आर्थिक विकास में पर्यटन उद्योग की संभावनाएँ एवं चुनौतियाँ

डॉ. देवेन्द्र मुझाल्दा\*, डॉ. राजू बघेल\*\*

### शोध सार (Abstract)

पर्यटन को आर्थिक विकास और रोजगार सृजन का एक सशक्त माध्यम माना जाता है। पर्यटन क्षेत्र देश का सबसे बड़ा सेवा उद्योग है। वर्ष 2007-08 में पर्यटन का देश के सकल घरेलू उत्पादन में 5.92 फीसदी और नौकरियों में 9.24 फीसदी का योगदान रहा। पर्यटन भारत की सामाजिक-आर्थिक विकास का रीढ़ रहा है क्योंकि यह राष्ट्रीय स्तर पर ही नहीं बल्कि स्थानीय स्तर पर भी रोजगार के असीमित अवसर प्रदान करता है। यह सुदूरवर्ती और अल्प विकसित इलाकों के विकास के साथ-साथ रोजगार सृजन का भी बहुत ही महत्वपूर्ण उपकरण है। परन्तु भारत में पर्यटकों की जरूरतों की पूर्ति के लिए सत्कार से प्रशिक्षित लोगों की कमी है, विभिन्न पर्यटन स्थलों में समन्वय और समजस का अभाव है। पर्यटन उद्योग में विशेष रूप से अकुशल और अर्द्धकुशल श्रमिकों के लिए पर्याप्त रोजगार के अवसर पैदा करने की क्षमता है। यह उद्योग गरीबी उन्मूलन, पर्यावरण संरक्षण, रोजगार सृजन, महिलाओं एवं अन्य वंचित समूहों के विकास के द्वारा सतत मानवीय विकास का प्रमुख साधन बन रहा है। देश में पर्यटन के धारणीय विकास का प्रश्न है—जो पर्यावरण नुकसान पहुँचाए बगैर आगे बढ़ सके।

### प्रस्तावना

पर्यटन भारत की सामाजिक आर्थिक विकास का रीढ़ रहा है क्योंकि यह राष्ट्रीय स्तर पर ही नहीं बल्कि स्थानीय स्तर पर भी रोजगार के असीमित अवसर प्रदान करता है। भारत में तीर्थस्थलों की यात्रा का इतिहास सदियों पुराना है।<sup>1</sup> देश के आर्थिक विकास में जिस प्रकार कृषि की अहम भूमिका है ठीक उसी प्रकार वर्तमान में पर्यटन की बेला में प्रकृति व सांस्कृतिक धरोहर पर्यटन उद्योग में अहम भूमिका निभा रहा है।

वर्तमान विश्व परिदृश्य में पर्यटन एक उद्योग के रूप में विकसित हो रहा है। अधिकांश

देशों में यह कुल राष्ट्रीय आय का एक महत्वपूर्ण भाग बन गया है। आर्थिक विकास के साथ-साथ परिवहन के साधनों में आई क्रांति ने विश्व के देशों में दूरियाँ कम की है जिससे पर्यटन उद्योग में अधिक वृद्धि हुई है। औद्योगिक क्रांति में आई गुणवत्ता एवं वस्तुओं की मात्रात्मक वृद्धि से विश्व बाजार में प्रतियोगिताएँ बढ़ी है फलस्वरूप वस्तुओं की कीमतों में कमी आई है। इसका प्रत्यक्ष प्रभाव विदेशी मुद्रा के अर्जन पर पड़ा है। इन सब परिस्थितियों में पर्यटन का उद्योग के रूप में विकसित होना निश्चित रूप से आर्थिक-सामाजिक वृद्धि में सहायक होगा।<sup>2</sup>

\* विभागाध्यक्ष, भूगोल विभाग, माधव विश्वविद्यालय, पिण्डवाड़ा, राजस्थान।

\*\* सहायक प्राध्यापक (अध्यापक), शा. स्नातकोत्तर महाविद्यालय, झाबुआ, म.प्र.।

Correspondence E-mail Id: editor@eurekajournals.com

पर्यटन उद्योग रोजगार सृजन का एक सशक्त माध्यम माना जाता है। पर्यटन क्षेत्र देश का सबसे बड़ा सेवा उद्योग है। वर्ष 2007-08 में पर्यटन का देश के सकल घरेलू उत्पादन में 5.92 फीसदी और नौकरियों में 9.24 फीसदी का योगदान रहा। पर्यटन क्षेत्र के वर्तमान विकास में वृद्धि या 12वीं योजना अवधि में इसे बरकरार रखने की चुनौतियों में होटल, सड़कें, वाहन, रास्ते की सुविधाएँ सुगम बनाने वाले केन्द्र जैसी अतिरिक्त पर्यटन अयसरचना सुविधाओं का सृजन करना शामिल है। देश में पर्यटन उद्योग के विकास हेतु अक्टूबर 1966 में भारतीय पर्यटन विकास निगम की स्थापना की गई थी, निगम ने समूचे देश में एल वृहद होटल श्रेणी बनाने में सफलता प्राप्त की है। महलों, हवेलियों, दुर्गों, किलों के अलावा 1950 से पहले बने आवासीय भवनों में चल रहे होटलों के लिए 'हेरिटेज' नाम का नया वर्ग बनाया गया, यह पर्यटकों को अत्यन्त प्रिय भी है।<sup>3</sup> पर्यटन निर्यातानुमुखी सेवा क्षेत्र है। जिसमें विशेष रूप से अकुशल और अर्द्धकुशल श्रमिकों के लिए पर्याप्त रोजगार के अवसर पैदा करने की क्षमता है। यह उद्योग गरीबी उन्मूलन, पर्यावरण संरक्षण, रोजगार सृजन, महिलाओं एवं अन्य वंचित समूहों के विकास के द्वारा सतत मानवीय विकास का प्रमुख साधन बन रहा है।

पर्यटन विकास के लिए आवश्यक है—पर्यटन स्थलों में आधारभूत सुविधाओं को विकसित करना। जिन पर्यटन स्थलों में यह सुविधा उपलब्ध है वहाँ पर आय में वृद्धि हुई है। पर्यटन से सामाजिक संरचना एवं सांस्कृतिक पृष्ठभूमि में आमूलचूल परिवर्तन हुए हैं क्योंकि पर्यटन देशों के मध्य अन्तर्सम्बन्ध स्थापित करता है। इस तरह पर्यटन एक ओर आर्थिक विकास करता है वहीं दूसरी ओर सामाजिक—सांस्कृतिक बदलाव लाता है। परन्तु भारत में पर्यटकों की जरूरतों की पूर्ति के लिए सत्कार से प्रशिक्षित लोगों की कमी

है, विभिन्न पर्यटन स्थलों में समन्वय और संमजस का अभाव है। देश में पर्यटन के धारणीय विकास का प्रश्न है— ऐसा विकास जो पर्यावरण के साथ सहकार स्थापित कर सके और बगैर उसे नुकसान पहुंचाएँ आगे बढ़ सकें।

## रोजगार सृजन और पर्यटन उद्योग

पर्यटन एक ऐसा व्यवसाय है, जो किसी रूप में पूरे समूह को प्रभावित करता है। ऐसे में पर्यटन समूचे गाँव के लोगों को प्रत्यक्ष एवं अप्रत्यक्ष रूप से रोजगार उपलब्ध कराएगा। यदि गाँव में ही वाहन, खानपान व अन्य तरह के स्टॉल खुलेंगे और पर्यटन उसे खरीदेंगे तो हमें रोजगार मिलेगा। इसके अलावा भी ग्रामीण एवं परंपरागत रोजगार को भी बढ़ावा मिलेगा। क्योंकि गाँवों से तमाम परंपरागत रोजगार सिर्फ इसलिए खत्म होते जा रहे हैं कि उनके खरीदने वाले न के बराबर हैं। दूसरा कारण यह भी सामने आता है कि लागत और बाजार तक पहुंचाने में जो खर्च आता है, वह काफी अधिक हो जाता है। लेकिन जब पर्यटन गाँव में ही आएंगे तो संबंधित गाँव में बनने वाली चीजें खरीदने में पीछे नहीं रहेंगे। ऐसे में ग्रामीण विकास को बढ़ावा मिलेगा<sup>4</sup> और नये रोजगार का सर्जन होगा। पर्यटन उद्योग सुदूरवर्ती और अल्प विकसित इलाकों के विकास के साथ—साथ रोजगार सृजन का भी बहुत ही महत्वपूर्ण उपकरण है। पर्यटन का महत्वपूर्ण पक्ष शिक्षित महिलाओं और बेरोजगारों को रोजगार के अवसर उपलब्ध कराना है। विशेषतः दूरस्थ एवं पिछड़े क्षेत्रों में। साथ ही साथ यह राष्ट्रीय आय में वृद्धि करने में सहायक होता है। महिलाएँ पुरुषों की अपेक्षा होटलों में, हवाई सेवा में, यात्री बसों में, हस्तकला से बनी वस्तुओं के विक्रय में एवं सांस्कृतिक कार्यक्रमों में कम हैं। जबकि वे इस क्षेत्र में महत्वपूर्ण भूमिका निभ सकती हैं।

## भारत में विदेशी पर्यटकों का आगमन एवं मुद्रा आय

वर्ष 2008 में विदेशी पर्यटकों की कुल संख्या 5.28 मिलियन थी जो 2009 में 5.17 हो गई थी। वर्ष 2011 के दौरान भारत की यात्रा पर आने वाले विदेशी पर्यटकों की कुल संख्या 6.31 मिलियन थी, जो एक वर्ष पूर्व 2010 में 5.78 मिलियन रही थी। रूपये के अर्थ में 2010 में पर्यटन से प्राप्त विदेशी मुद्रा अर्जन 2009 के दौरान 53700 करोड़ की तुलना में 20.8 प्रतिशत की वृद्धि दर के साथ 64889 करोड़ थी। वर्ष 2011 में विदेशी मुद्रा अर्जन की राशि बढ़कर 77591 करोड़ थी एवं 2012 में 94487 करोड़ हो गई।

मंत्रालय के इन आंकड़ों के अनुसार 2012 में भारत की यात्रा पर आने वाले विदेशी पर्यटकों ने सर्वाधिक संख्या अमरीकियों की थी। जबकी ब्रिटेन व बांग्लादेश का इस मामले में दूसरा व तीसरा स्थान था। 2011 की तुलना में 2012 में भारत आने वाले अमरीकी पर्यटकों की संख्या में जहाँ वृद्धि हुई, वहीं ब्रिटेन व बांग्लादेश से भारत आने वाले पर्यटकों की संख्या में कुछ कमी दर्ज की गई थी।<sup>8</sup>

## घरेलू पर्यटक यात्राएँ

वर्ष 2008 में देश में घरेलू पर्यटकों की संख्या 563.03 मिलियन थी जो बढ़कर 2009 में 668.80 मिलियन तथा 2010 में 747.70 मिलियन रही थी। इस प्रकार घरेलू पर्यटकों की संख्या में 11.0 तथा 15.0 प्रतिशत की वृद्धि 2010 तथा 2011 में दर्ज की गई थी एवं 2012 में 20.9 प्रतिशत की वृद्धि हुई। पर्यटन मंत्रालय के इन आँकड़ों के अनुसार 2010 में सर्वाधिक 15.50 करोड़ घरेलू पर्यटन आन्ध्रप्रदेश में गए, जबकि 14.40 करोड़ पर्यटकों के साथ उत्तरप्रदेश का दूसरा तथा 11.16 करोड़ पर्यटकों के साथ तमिलनाडु का इस मामले में तीसरा स्थान रहा।<sup>9</sup>

केन्द्र सरकार ने पर्यटन उद्योग के विकास हेतु निम्नलिखित योजनाएँ प्रारम्भ की हैं—

1. व्याज इमदाद योजना।
2. आवास अवसंरचना प्रोत्साहन योजना।
3. टेरिटेज होटल योजना।

घरेलू पर्यटकों की बढ़ती इच्छा, जिज्ञासा, कमाई में बढ़ोतरी और घुमक्कड़ी के ताजा शौक को भी शामिल कर लें तो हमारे सम्मुख जिस पर्यटन उद्योग को तस्वीर तैयार होती है। वह संभवतः दुनियाभर में सबसे तेज गति से बढ़ रहे पर्यटन उद्योग की तस्वीर है।

## आर्थिक-सामाजिक विकास और पर्यटन उद्योग

पर्यटन स्थलों के विस्तार एवं विकास का उन क्षेत्रों के आर्थिक-सामाजिक विकास में बड़ा गहरा प्रभाव पड़ता है। इससे रोजगार के व्यापक अवसर मिलने के साथ घरेलू उद्योगों को भी बढ़ावा मिलता है। वहाँ की कला और संस्कृति तथा हस्तशिल्प को पहचान मिलती है और उन क्षेत्रों को समृद्ध विरासत को राष्ट्रीय अंतरराष्ट्रीय ख्याति मिलती है।

यात्रा मार्गों के बीच एक नया बाजारवाद प्रचलित हुआ है। जिनमें वहाँ की स्थानीय वस्तुएँ जगह-जगह बिक्री के लिए उपलब्ध होती हैं इससे लघु उद्योगों के पनपने के अवसर बढ़ रहे हैं पहाड़ी क्षेत्रों में तरह-तरह के फलों के जूस, आचार-नुरब्बे, चाय से लेकर हस्तशिल्प की वस्तुएँ स्मृतिचिह्न के रूप में उन यात्राओं की स्मृति को तरोताजा बनाएँ रखती हैं। रेगिस्तानी क्षेत्र में जहाँ कलात्मक वस्तुएँ उपलब्ध होती हैं। वहीं स्थानीय साड़ी, चादरोँ एवं खानपान की वस्तुओं को बाजार मिलता है। समुद्र तटीय क्षेत्रों में नारियल से बनी कलात्मक वस्तुओं, शंख-सीपी तथा वहाँ परंपरागत साड़ियों आदि को सुदूर तक जाने का अवसर मिलता है। भारत अनेकता में एकता का सबसे बड़ा

प्रतीक है। इसको समृद्ध करने में पर्यटन को सबसे बड़ा योगदान है। बिना किसी निवेश के छोटी-छोटी चीजें पर्यटकों को बेचने के काम में सैकड़ों परिवार लगे हैं और वहीं उनकी रोजी-रोटी भी है।<sup>8</sup> मौसम के अनुसार फल एवं उनके जूस आदि को बेचकर वे अपना गुजारा करते हैं।

## निष्कर्ष एवं सुझाव

वर्तमान परिस्थितियों में जब हम आर्थिक एवं सामाजिक विकास की बात करते हैं तो पर्यटकों द्वारा प्राप्त आय उसमें एक बड़ा हिस्सा प्रदान करती है। पर्यटन का आर्थिक विकास पर निम्न प्रकार से प्रभाव पड़ता है—

1. नए रोजगार के अवसर उपलब्ध होने पर रोजगार की समस्या समाप्त होती है।
2. पर्यटन उद्योग से विदेशी मुद्रा का अर्जन होता है।
3. जिन देशों में पर्यटन स्थल अधिक है वहाँ पर्यटन उद्योग के रूप में विकसित हो रहा है।

भारत में पर्यटन उद्योग भारतीय अर्थव्यवस्था के तीव्र विकास में बहुमूल्य योगदान कर रहा है। यह अन्य उद्योगों को भी बढ़ावा देता है एवं रोजगार के लाखों अवसर उत्पन्न करता है। इससे विदेशी मुद्रा की आय होती है। पर्यटन उद्योग अर्थव्यवस्था के अन्य क्षेत्रों जैसे हस्तशिल्प, परिवहन, बागवानी, कुक्कफट पालन, निर्माण आदि क्षेत्रों के अप्रत्यक्ष रूप से विकास में सहायक है। भारतीय पर्यटन क्षेत्र में अभी काफी कुछ किये जाने की दराकार है। हालांकि हमारे पास पर्यटन उद्योग की बढ़ोतरी के लिए अपेक्षित संसाधन मौजूद हैं, लेकिन अधिकांश जगहों पर बुनियादी सुविधाएँ बेहद नगण्य और प्राथमिक हैं। पर्यटन स्थलों तक पहुँच की समस्या है, आधुनिक सुविधायुक्त ठहरने की जगह की समस्या है। पर्यटकों की जरूरतों की पूर्ति के लिए सत्कार से प्रशिक्षित लोगों की कमी है, विभिन्न पर्यटन स्थलों में समन्वय और

संमजस का अभाव है। देश में पर्यटन उद्योग के लिये धारणीय विकास का प्रश्न है—ऐसा विकास जो पर्यावरण के साथ सहकार स्थापित कर सके और बगैर उसे नुकसान पहुँचाएँ आगे बढ़ सके ऐसे पर्यटन उद्योग की आवश्यकता है।

## संदर्भ ग्रंथ सूची

- [1]. कुरुक्षेत्र (मई 2010) ग्रामीण विकास मंत्रालय नई दिल्ली 110011 पृ. 10।
- [2]. सती, वी.पी. एवं गुप्ता यु.सी. (2007) "मध्यप्रदेश के पर्यटक स्थल" समीक्षा पब्लिकेशन्स, गांधीनगर, दिल्ली 110031 पृ 66-71।
- [3]. कुरुक्षेत्र (मई 2012) ग्रामीण विकास मंत्रालय नई दिल्ली 110011 पृ. 17।
- [4]. कुरुक्षेत्र (मई 2012) ग्रामीण विकास मंत्रालय नई दिल्ली 110011 पृ. 21।
- [5]. भारतीय पर्यटन आँकड़े एक झलक (जुलाई-2014) "मार्केट अनुसंधान प्रभाग" पर्यटन मंत्रालय, भारत सरकार नई दिल्ली।
- [6]. भारतीय अर्थव्यवस्था (प्रतियोगिता दर्पण 2014) उपकार प्रकाशन 2/ए स्वदेशी बीमा नगर आगरा-282002 पृ. 136।
- [7]. प्रतियोगिता दर्पण (भारतीय अर्थव्यवस्था 2017) उपकार प्रकाशन 2/ए स्वदेशी बीमा नगर आगरा-282002 पृ. 131।
- [8]. कुरुक्षेत्र (मई 2010) ग्रामीण विकास मंत्रालय नई दिल्ली 110011 पृ. 11।
- [9]. माहेश्वरी पी.डी. एवं गुप्ता शीलचन्द्र (2007) "भारत में आर्थिक पर्यावरण" कैलाश पुस्तक सदन भोपाल।
- [10]. Rathore, Devendra and Sharma, L.N. And Sharma Ashish "Contribution of tourism industry in employment growth in India" Naveen shodh sansar (An International Refereed Journal) May 2014 Online Edition. Pp 18-20.
- [11]. <http://turism.gov.in/>.
- [12]. [http://en.wikipedia.org/wiki/turism\\_in\\_india](http://en.wikipedia.org/wiki/turism_in_india).